

मूल्याङ्कन प्रश्नावली पर चर्चा

मूल्याङ्कन सीखने सीखने का अभिन्न अंग होता है। मूल्यांकन द्वारा न सिर्फ बच्चों की अधिगम संप्राप्ति का पता चलता है अपितु साथ ही साथ शिक्षक को यह भी पता चलता रहता है कि वह अपने शिक्षण कार्य में कितना सफल हो पा रहा है। क्या बच्चे शिक्षक द्वारा अपनाई गयी तकनीक / विधा से लाभान्वित हो रहे हैं अथवा नहीं यह भी सतत मूल्याङ्कन के द्वारा एक शिक्षक पता करता रहता है। बच्चों की उपलब्धि का मूल्याङ्कन कई तरीकों से किया जाता है। जैसे – उनसे बातचीत करके, मौखिक रूप से प्रश्न पूछकर, लिखित रूप से प्रश्न पूछकर एवं उन्हें कार्य करते हुए देखकर।

जब मौखिक अथवा लिखित रूप से प्रश्न करके बच्चों की संप्राप्ति का मूल्याङ्कन किया जाता है तो शिक्षक कई प्रकार के प्रश्नों को प्रयोग करता है। हम यह जानते हैं की नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों को आकलित / मूल्यांकित करने के दौरान भी हमें कई प्रकार के प्रश्नों को प्रयोग करने की आवश्यकता होती है।

आइये सबसे पहले हम प्रश्नों के प्रकारों तथा उनकी विशेषताओं को जानते हैं।

ज्ञान के स्तर के अनुसार पूछे जाने वाले प्रश्नों को मुख्य रूप से चार भागों में बाँट कर देखा जा सकता है –

1. ज्ञान
2. बोध
3. अनुप्रयोग
4. कौशल

ज्ञान –

इस श्रेणी के प्रश्नों की विशेषता यह होती है कि ये पुनः स्मरण पर आधारित होते हैं। ज्ञानात्मक प्रश्नों के अंतर्गत विभिन्न पक्षों यथा – प्रत्ययों, संकेतों, परिभाषाओं, सिद्धांतों, सूत्रों, प्रक्रियाओं, विधियों, संरचनाओं आदि का पुनः स्मरण तथा पहचान करना शामिल होता है।

बोध –

ज्ञान के उपरान्त बोध का क्रम आता है। इस स्तर पर बच्चे विभिन्न सूचनाओं के ज्ञान के साथ – साथ सूचनाओं से सम्बंधित अच्छी समझ भी रखते हैं। बोध स्तर में ज्ञान के पुनः स्मरण तथा पहचान के साथ – साथ उस ज्ञान की अच्छी समझ भी निहित होती है। इसमें विभिन्न तथ्यों की व्याख्या भी सम्मिलित होती है।

अनुप्रयोग –

अनुप्रयोग के प्रश्नों में यह अवसर होता है कि बच्चे विभिन्न स्थूल या विशिष्ट परिस्थितियों में अपने ज्ञान व बोध के आधार पर किये गए अमूर्तकरण का उपयोग करते हैं। इनमें सामान्य विचार, प्रक्रिया नियम तथा सामान्यकृत विधि सम्मिलित होते हैं। ये अमूर्तकरण उन तकनीकी सिद्धांतों के भी हो सकते हैं जिनमें पुनः स्मरण करना व प्रयोग करना होता है। अनुप्रयोग में ज्ञान व बोध को विशिष्ट स्थूल परिस्थितियों में प्रयोग में लाने की क्षमता उत्पन्न की जाती है जिसमें निम्नलिखित तथ्य पाए जाते हैं :-

- तर्क करना
- परिकल्पना करना
- परिकल्पना की जांच करना
- निष्कर्ष ज्ञात करना
- निष्कर्ष के आधार पर प्रयोग करना

कौशल –

ज्ञान का बोध करके तथा उसे अनुप्रयोग द्वारा परिमार्जित करके सफलतापूर्वक व्यवहार में प्रयुक्त करना ही कौशल है। प्रश्नों के माध्यम से यह इस बात की जांच की जाती है कि बच्चों ने किस क्षेत्र विशेष, कार्य विशेष या तकनीकी विशेष में कुशलता अर्जित कर ली है। कौशल के अंतर्गत बच्चों में निम्नलिखित विशेषताएं विकसित होती हैं –

- सृजन करना
- विश्लेषण करना

- संश्लेषण करना
- आलोचना करना
- भेद करना
- प्रभाव डालना
- पूर्ण करना
- निर्णय लेना
- मूल्याङ्कन करना

हम सभी ने प्रश्नों के विभिन्न प्रकारों के बारे में जाना। हम यह भी जानते हैं कि मानवीय मूल्य के विकास का आकलन बेहतर हम तब पाएंगे जब बच्चों को अपने अनुभव, चिन्तन, ज्ञान, समझ, संवेदनशीलता तथा व्यवहार के आधार पर प्रश्नों का उत्तर देने का अवसर मिले। यह अवसर मौखिक अथवा लिखित किसी भी स्वरूप में हो सकता है। बच्चों के सामने जब खुले छोर के प्रश्न रखे जाते हैं तो उन प्रश्नों के उत्तर देते समय बच्चे स्वतंत्र रूप से अपने विचारों तथा दृष्टिकोण को शामिल करते हैं। उनके यही विचार और दृष्टिकोण शिक्षक को उनका मूल्याङ्कन करने में मदद करते हैं कि उनमें (छात्रों) कौन-कौन से मानवीय मूल्य विकसित हो रहे हैं। जहाँ तक नैतिकता के मूल्याङ्कन की बात है तो यह तभी आकलित / मूल्यांकित हो सकता है जब हम बच्चों को इस प्रकार की गतिविधि में शामिल करें जब हम उन्हें नैतिकता को प्रदर्शित करते हुए देख सकें। आइये इसे एक उदाहरण से समझते हैं –

शिक्षक चाहते हैं कि लिखित प्रश्न के द्वारा यह ज्ञात करें कि किस बच्चे में ईमानदारी जैसा मानवीय मूल्य विकसित हो चुका है। उन्होंने एक बहुविकल्पीय प्रश्न बच्चों को हल करने को दिया –

प्रश्न – इस कक्षा में आप सब कुल 22 लोग बैठे हैं। मैं 22 केले लाकर यहाँ टेबल पर रख देता हूँ। आप कितने केले लेना चाहेंगे ?

(क) 1

(ख) 2

(ग) जितने में पेट भर जाय।

बच्चे इस लिखित प्रश्न का उत्तर संभवतः पहला विकल्प ही चुनना चाहेंगे।

आइये इसी गतिविधि को दूसरे तरह से करके देखते हैं –

प्रश्न – बगल के कक्ष में कुल 22 केले रखे हैं | आप सब कुल 22 बच्चे हैं | एक बार में एक ही बच्चा अन्दर जायेगा और केला वही खाने के बाद बाहर आएगा | जब वो बाहर आ जायेगा तब दूसरा बच्चा अन्दर जायेगा | आप जाइये और अपने – अपने लिए केला लेकर खा लीजिये |

संभावित परिणाम –

(क) सभी बच्चे एक – एक केला ही खाए |

(ख) कोई बच्चा एक से अधिक केला खा ले |

शायद यह तरीका ज्यादा बेहतर होगा कि हम बच्चों के ईमानदारी , दूसरों का ध्यान रखना जैसे मानवीय मूल्यों को विकसित होते हुए देख सकें |

इस गतिविधि में यदि बाद में अन्दर जाने वाले किसी बच्चे को केला नहीं मिला तो अलग से रखे केले को उसे देते हुए सामूहिक रूप से यह चर्चा अवश्य की जाय की ऐसा क्यों हुआ | इस गतिविधि का संभावित परिणाम यह होगा कि अगली बार सभी बच्चे एक ही केला उठाएं |

आईये कुछ वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उदाहरण के माध्यम से यह जानने का प्रयास करते हैं कि यह प्रश्न कितना सटीक मूल्याङ्कन कर पाते हैं |

प्रश्न 1 – अपने साथी / पड़ोसी में क्या देखना चाहिए –

(क) उसकी कमियां देखनी चाहिए |

(ख) उसकी अच्छाइयां देखना चाहिए |

प्रश्न 2 – अपने शिक्षकों से डांटे जाने पर आप –

(क) चुपचाप डाट सुनेंगे |

(ख) आगे से वह गलती नहीं दोहराएंगे |

प्रश्न 3 - छोटा जादूगर पाठ से आपने क्या सीखा ?

(क) जादू के खेल दिखाना |

(ख) कठिनाई में हिम्मत से काम लेना |

प्रश्न – 4 कोई व्यक्ति अच्छा है , इसकी पहचान आप कैसे करेंगे ?

(क) उसके आचरण और व्यवहार से ।

(ख) उसके रूप और रंग से ।

उपर्युक्त प्रश्नों का अध्ययन करें । आपको क्या लगता है इन प्रश्नों के माध्यम से आप बच्चों के मानवीय मूल्य तथा नैतिकता का सटीक आकलन कर पाएंगे । इन प्रश्नों के उत्तर देते समय यह अवश्य ध्यान रखेंगे कि कौन सा उत्तर देना ठीक रहेगा । कौन से उत्तर निर्धारित सामाजिकता के आधार ग्राह्य है । जबकि अपने व्यक्तिगत जीवन में वह उनका पालन न कर रहा हो ।

यदि इन्हीं प्रश्नों को निम्न प्रकार से किया जाय –

1. यदि आपके पड़ोस में रहने वाला आपका दोस्त अचानक बीमार हो जाय और उसके घर में उसके अलावा और कोई न हो तो आप उसकी मदद कैसे करेंगे ?
2. शिक्षक किसी बच्चे को कब डांटते हैं ; ऐसा क्या करें की शिक्षक की डांट न पड़े ?
3. जादूगर पाठ की कहानी में जिस बच्चे की बात की गयी है , यदि उसकी जगह तुम होते तो क्या करते ?
4. आपको क्या – क्या करना चाहिए जब सभी लोग कहें कि आप एक अच्छे बच्चे हैं ?

आपने देखा की प्रश्न के शब्दों में बदलाव करने से आप बच्चों में निहित मानवीय मूल्य एवं प्रदर्शित नैतिकता का बेहतर मूल्याङ्कन कर पा रहे हैं ।

हमें आकलन हेतु प्रश्न निर्माण करते समय विशेष रूप से अनुप्रयोग एवं कौशल आधारित प्रश्नों को शामिल करना चाहिए । प्रश्नों के साथ – साथ बच्चों को विभिन्न गतिविधियों में शामिल करना चाहिए जिससे कि उनका बेहतर मूल्याङ्कन हो सके तथा शिक्षक प्रसंगों , कहानियों घटनाओं तथा अपने को स्वयं आदर्श रूप में प्रस्तुत कर बच्चों की नैतिकता एवं मानवीय मूल्य को विकसित करने में अपना योगदान दे सके ।

धन्यवाद ।

अखिलेश्वर प्रसाद गुप्ता

वाराणसी